Golden Research Thoughts
Vol -2 , ISSUE –6, Dec 2012
ISSN:- 2231-5063
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

सुरेंद्र वर्मा एवं जयवंत दळवी के नाटक – साहित्य में स्त्री–पुरुष संबंध
('सेतुबंध' और 'महासागर' के विशेष परिप्रेक्ष्य में)

डॉ. जिभाऊ शा. मोरे
कोपरगाँव

स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में और आगे सन् १९६० के पश्चात् हिंदी नाटक का विकास अधिक द्रुत गति के साथ हुआ । क्योंकि पराधीनता स्वाधीनता में तब्दील होने से भारतीय जन जीवन में नई चेतना जागी । और यह स्वाभाविक भी था । हिंदी में जयशंकर प्रसाद के बाद वृंदावनलाल वर्मा, सेठ गोविंददास, लक्ष्मीनारायण मिश्र जैसे महान नाटककार हुए । इनके पश्चात् स्वातंत्र्योत्तर और साठोत्तरी कालखंड में जगदीशचंद्र माथुर, विष्णु प्रभाकर, लक्ष्मीनारायण लाल, शंकर शेष और मोहन राकेश जैसे उच्च कोटि के नाटककार हुए । वहीं मराठी में वि.वा. शिरवाडकर, श्री.ना. पेंडसे, वसंत कानेटकर, पु.ल. देशपांडे, विद्याधर गोखले, विजय तेंडुलकर आदि कई श्रेष्ठतम नाटककारों ने मराठी नाट्य जगत को समृद्ध किया। इसी क्रम में मराठी में श्री. जयवंत दळवी और हिंदी में सुरेंद्र वर्मा जैसे उच्चकोटि के नाटककार भी हुए । मराठी के जयवंत दळवी तो इस दुनिया में नहीं है, मगर सुरेंद्र वर्मा अभी भी उसी दम– खम के साथ नाट्ययात्रा से जुडे हुए हैं।

जयवंत दळवी एक अत्यंत सफल कथाकार के साथ साथ साठोत्तरी पीढी के एक लोकप्रिय और चर्चित नाटककार हैं । उन्होंने 'सूर्यास्त, 'पुरुष', 'कालचक्र', 'स्पर्श', 'नातीगोती', 'किनारा', 'लग्न', 'बॅरिस्टर', 'महानगर', 'सावित्री', 'मुक्ता', 'अपूर्णांक' आदि लगभग २ दर्जन नाटकों का सृजन कर मराठी नाटक साहित्य को समृदध किया है । वहीं सुरेंद्र वर्मा साठोत्तरी कालखंड के और मोहन राकेश के बाद के हिंदी के अत्यंत चर्चित एवं सफल नाटककार रहे हैं। उन्होंने नई चेतना से संपन्न कतिपय प्रयोगशील नाटक लिखकर हिंदी नाटक साहित्य को एक नया आयाम प्रदान किया है। वर्माजी ने अबतक 'सेतुबंध', 'नाटक–खलनायक–विदूषक', 'द्रौपदी', 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक', 'आठवाँ सर्ग', 'छोटे सैयद–बडे सैय्यद' 'शकुंतला की अंगूठी', 'एक दूनी एक' जैसे एकाधिक प्रयोगशील नाटकों की रचना कर अपनी विशिष्टता का प्रमाण दिया है। जहाँ तक जयवंत दळवी और सुरेंद्र वर्मा के नाटकों के कथ्य एवं शिल्प का संबंध है, दोनों नाटककारों ने साठोत्तरी भारतीय स्त्री– पुरुष संबंधों के बदलते स्वरुप पर पर्याप्त प्रकाश डाला है। दोनों के अधिकांश नाटक इस तथ्य के उदाहरण हैं । अत: इन समानधर्मा और लगभग समकालीन नाटककारों के नाटक साहित्य में चित्रित स्त्री–पुरुष संबंधों पर दृष्टिपात करना मेरा अभीष्ट है । विशेषतया जयवंत दळवी के 'महासागर' और सुरेंद्र वर्मा के 'सेतुबंध' नाटकों के परिप्रेक्ष्य में मैं अपना विचार आगे बढ़ाना चाहता हूँ । इन दो नाटकों में वर्णित स्त्री–पुरुष संबंधों की तुलनात्मक चर्चा करने से पूर्व उनका संक्षिप्त परिचय पृष्ठभूमि के रुप में प्रस्तुत है ।

सुरेंद्र वर्मा का 'सेतुबंध'

सन १९७२ में भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से सुरेंद्र वर्मा के 'तीन नाटक' शीर्षक पुस्तक प्रकाशित हुई । इस पुस्तक में उनकी 'सेतुबंध', 'नायक खलनायक, विदूषक' और 'द्रौपदी' शीर्षक तीन नाट्यरचनाएँ संगृहीत हैं । 'सेतुबंध' नाटक में प्रभावती नामक एक राजकुमारी की प्रेमानुभूति की बलि दी जाती है । राजनीतिक लाभ सिद्ध करने के लिए प्रभावती की शादी उसके प्रेमी कालिदास के बजाय एक औसत पुरुष के साथ कर दी जाती है, भले ही वह वाकाटक साम्राज्य का नरेश है। पिता के दबाव में आकर वह एक अनचाहे पुरुष के साथ विवाह तो कर लेती है, किंतु आंतरिक द्वंद्व और छटपटाहट महसूस करती है। उसका जीवन त्रासद बन जाता है। वह मन ही मन कालिदास की बनी रहती है । प्रवरसेन के रुप में एक पुत्र

को जन्म देकर भी वह पूर्णतया वाकाटक नरेश की पत्नी नहीं बन पाती। भावनाओं के स्तर पर वह अब भी कुंआरी ही रह जाती है । ऐसी हालातों में 'यदि पर–पुरुष पति और पति पर–पुरुष बन जाए तो क्या आश्चर्य?'[१] प्रभावती का पुत्र प्रवरसेन अपनी माँ के गैर मर्द के साथ संबंधों को जानकर आंतरिक द्वंद्व और कचोट अनुभव करता है । इस नाटक के माध्यम से सुरेंद्रजी ने प्राचीन पात्रों के द्वारा आधुनिक मानव मन के बैचेन पहलुओं को उजागर किया है । उनकी छटपटाहट को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान की है । 'यह नाटक सेक्स के विकृत मूल्योंके विरुध्द खडा है ।'[२]

जयवंत दळवी का 'महासागर' (प्रकाशन : १९७९)

'महासागर' जयवंत दळवी की क्रमश: पंचम नाटयकृति है, जिसके द्वारा उन्होंने स्त्री–पुरुष संबंधों पर नए ढंग से प्रकाश डाला है। स्त्री–पुरुष संबंधों पर आधारित होने के बावजूद भी यह नाटक किसी भी तरह की विकृतियों से परे है। कथानायक घनश्याम, नायिका सुमी और बीमा व्यावसायिक रेहमान की यह कहानी है । घनश्याम और सुमी आदर्श संस्कारों में पले बढें पति–पत्नी है। जिनका एक प्यारा सा बच्चा भी है। बंगला है, गाडी है, सारे सुख हाथ जोडकर उनके जीवन मे खडे हैं। स्त्रियों की आजादी को लेकर घनश्याम के विचार भिन्न हैं । उसके अनुसार स्त्री का भी मन होता है, अस्मिता होती है । उन्हें भी पुरुषों की भाँति आजादी होनी चाहिए । इसलिए वह अपनी पत्नी सुमी को आजादी देता है । सुमी संस्कारों में पली–बढी है, अपने पति और परिवार से लगाव रखनेवाली गृहिणी है । परंतु बातुनी स्वभाव की और खुलकर बात करनेवाली होने से रेहमान नामक बीमा व्यावसायिक की ओर आकर्षित होती है । हर पल एक्सायटिंगली जीने की आदी होने से भी वह रेहमान के रुप में पर– पुरुष की ओर आकर्षित होती है । एक टूर के बहाने रेहमान के साथ पार्टी में हिस्सा लेकर उसके साथ उसी के घर ठहर कर गलत रस्ता अख्तियार करती है । उसके बचपन का साथी दिगंबर को उसका यह बर्ताव खटकता है । वह उसे समझाता भी है । इधर घनश्याम इन बातों से वाकिफ होने के बाद सुमी से घृणा करने लगता है । यहाँ तक कि अपने बेटे को भी सुमी से दूर रखकर एक तरह से सुमी से रिश्ता तोड देता है । नतीजा सुमी अंतर्बाह्य टूट जाती है और नींद की गोलियां खाकर आत्महत्या कर लेती है। उधर रहेमान भी मौत को गले लगाकर जिंदगी समाप्त कर देता है । इस तरह पर–पुरुष के प्रति बढा आकर्षण सुमी और उसके परिवार को बर्बाद कर देता है, क्योंकि भारतीय मानसिकता स्त्री की ऐसी हरकत को कभी क्षमा नहीं कर सकती । इस नाटक के द्वारा जयवंत दळवी जी यह संदेश देना चाहते हैं कि शरीर–सुख के संदर्भ में प्रत्येक व्यक्ति का मन मानों एक महासागर है ।

'सेतुबंध' और 'महासागर' में चित्रित स्त्री–पुरुष संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन –

मराठी के शीर्षस्थ नाटककार जयवंत दळवी और हिंदी के चर्चित नाटककार सुरेंद्र वर्मा ने अपने समग्र नाटक साहित्य में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज–जीवन की नित्य नई पर्तों को खोलकर अपनी अपनी विशिष्टता का परिचय दिया है । विशेषतया भारतीय परिवार और उनमें स्त्री–पुरुषों के बदलते संबंधों पर उपर्युक्त दोनों नाटककारों ने जो दृष्टिपात किया है, उसमें कई दृष्टियों से समानता है । दोनों के नाटक साहित्य में स्त्री–पुरुष संबंधों का जो चित्रण हुआ है, उसमें समानता के कई बिंदू हैं, जिन्हें निम्न तरह से रेखांकित किया जा सकता है ।

स्वतंत्रता–प्राप्ति के पश्चात् भारतीय जनजीवन अंतर्बाह्य बदला । पुरुष वर्ग के साथ–साथ नारी–समाज भी पढने लगा । पढाई के बहाने और बाद में नौकरी आदि के बहाने नारियाँ घर से बाहर निकलने लगी । इस कारण उनके जीवन में बदलाव आया । सन ६० के बाद तो इसमें और अधिक वृध्दि हुई । नारियाँ और अधिक खुलकर विचरण करने लगी । नौकरी, करियर आदि बातें उन्हें आकृष्ट करने लगी । नारी के मन, भावनाओं आदि को एक मुक्त अवकाश मिला । कुछ हद तक पुरुषों ने इस बात को स्वीकार किया कि नारी का भी मन होता है। उन्हें भी लगता है कि बाहर निकले । सभा, सम्मेलन, पार्टी, दावत आदि जैसे सार्वजनिक कार्यक्रमों में शामिल हुआ जाए । अत: इस संबंध में उन पर अत्यधिक बंधन अनुचित है। उनकी भावनाओं की भी कद्र किया जाना जरुरी है । जयवंत दळवी के प्रसिद्ध नाटक 'महासागर' का नायक घनश्याम भी इन्हीं विचारों का प्रतिनिधित्व करता है । वह स्त्री की आजादी के साथ ही पति–पत्नी की परस्पर श्रद्धा, नैतिक मूल्यों को भी महत्व देता है। वह सुमी को पूरी आजादी देता है परंतु सुमी उस आजादी का गैरलाभ उठाकर बहकती जाती है। जीवन संबंधी कुछ अलग कल्पनाओं को मानसिक तौर पर महसूस करती हुई वीमेन क्लब की ट्रीप के बहाने रेहमान नामक पर–पुरुष की ओर आकृष्ट होती है। उसके साथ खंडाला घुम कर घनश्याम की अनुपस्थिति में रेहमान के साथ रात बिताती है । इन जैसी

बातों का दळवीजी ने नि:संकोच चित्रण कर विशिष्टता का परिचय दिया है । इसी तरह उन्होंने स्त्री–पुरुष संबंधों के अन्य कई रूपों का भी सटीक चित्रण किया है। पति–पत्नी, पर–पुरुष आकर्षण, भाई–बहन संबंध, माता–पुत्री संबंध, अन्य स्त्री–पुरुष संबंधों का उनके प्रस्तुत नाटक में सफलतापूर्वक निर्वाह हुआ है ।

इसीतरह सुरेंद्र वर्मा के 'सेतुबंध' में भी स्त्री–पुरुष संबंधों का अत्यंत बखूबी चित्रण हुआ है। इस नाटक में प्रभावती और कालिदास के माध्यम से तथा अन्य पात्रों के माध्यम से वर्तमान जीवन में बदलते स्त्री–पुरुष संबंधों का खुलकर चित्रण हुआ है । वाकाटक नरेश प्रवरसेन द्वितीय सेतुबंध के रचयिता के रुप में विख्यात है । उनकी माँ प्रभावती और कालिदास के मधुर संबंधों के माध्यम से नाटककार ने स्त्री–पुरुष संबंधों को नवीन ढंग और कोण से स्पष्ट किया है। प्रभावती विवाहपूर्व महाकवि कालिदास के प्रति आकर्षित थी, परंतु उसका विवाह उसकी इच्छा के विरुध्द पिता चंद्रगुप्त ने वाकाटक नरेश से कर दिया । जिससे प्रभावती आजीवन कचोट अनुभव करती रही । प्रभावती के पुत्र प्रवरसेन को अपनी माँ के कक्ष से रेशम में लिपटी 'मेघदूत' की पांडुलिपि मिल जाती है । इसकारण वह अपनी माँ और कालिदास के संबंधों को लेकर तनावग्रस्तता महसूस करता है । अंत में वह अपनी माँ प्रभावती से विवाह पूर्व कालिदास के साथ उसके प्रेम संबंधों की चर्चा करता है । यह चर्चा समाज मानस को झकझोर कर रख देती है । प्रभावती के पुत्र का यह वक्तव्य–'कुछ व्यक्ति ऐसे भी होते हैं, जिनके बाहरी रुप से मालूम नहीं पड़ता कि उनके अंदर कैसा रक्तपात है । सांसारिक धरातल पर वे सब कुछ उसी ढंग से करते हैं, जैसे एक औसत आदमी करता है, लेकिन भीतर ही भीतर वे एक समांतर जीवन जीते हैं।'[३] प्रवरसेन के साथ–साथ सभी पात्र आधुनिक पीढि का प्रतिनिधित्व करते हुए स्त्री–पुरुष संबंधों के नए आयाम उद्घाटित करते हैं । संक्षेप में वर्माजी ने 'असामान्य मनोवैज्ञानिक धरातल पर स्त्री–पुरुष संबंधों के विभिन्न कोणों को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है। इसतरह मराठी के अग्रगण्य नाटककार जयवंत दळवी और हिंदी के प्रसिद्ध नाटककार सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में कई समान बिंदू देखे जा सकते हैं ।

१. सेतुबंध (नाटक) – सुरेंद्र वर्मा
२. https://hindisahityavimarsh.com
३. महासागर (नाटक) – जयवंत दळवी